pp लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

सामाजिक उत्थान मे नवाचार व अंवेषण का महत्व

भाग-02

पिछले अंक का शेष

3.0 नकारात्मक रूझान: रचनात्मकता का शत्रु यह एक सर्वविदित तथ्य है कि किसी भी क्षेत्र में नकारात्मकता पूरी प्रक्रिया को बाधित कर देती है। रचनात्मक सोच और शिक्षण के संदर्भ में हम निम्न ऐसे तथ्यों को पाते हैं जो एक व्यक्ति के रचनात्मकता को बाधित करते है।

3.1 चलो ये कोई बात नहीं: वस्तुतः समस्या के प्रति प्रतिक्रिया समस्या से बड़ी समस्या होती है। कई व्यक्ति समस्याओं को अनदेखा करते है उनसे इन्कार तक करते हैं तब तक जब तक बहुत देर न हो जाय ऐसा इसीलिए क्योंकि इन लोगों ने जाना ही नहीं कि समस्या के प्रति उचित भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और वास्तविक प्रतिक्रिया क्या होती है। वस्तुतः एक समस्या एक अवसर होती है। सबसे प्रसन्न व्यक्ति तो वो होता है जो इन समस्याओं का स्वागत करता है इनके हल निकालता है इन्हें चुनौतियों के रूप में स्वीकार करता है और चीजों को सुधारने के लिए इन्हें अवसर के रूप में लेता है।

परिभाषा: एक समस्या वस्तुतः (1) आप क्या चाहते हैं और सामने क्या है इसके अन्तर को समक्ष देखना है। (2) इस तथ्य से वाकिफ होना है या यों कह लीजिए कि इस तथ्य में विश्वास करना है कि वर्तमान स्थिति से बेहतर स्थितियां भी अस्तित्व में है। (3) सकारात्मक क्रिया के लिए यह एक अवसर है। समस्याओं का जुझारूपन से हल खोजना आप में आत्मविश्वास लाता है, आपकी प्रसन्नता में वृद्धि करता है, और आपके जीवन के ऊपर आपका बेहतर नियंत्रण बनाता है।

3.2 यह सम्भव नहीं: यह रूझान वस्तुतः युद्ध क्षेत्र में समर्पण है यह मानकर की कोई काम नहीं किया जा सकता या किसी समस्या का हल सम्भव नहीं है एक व्यक्ति किसी समस्या को अभूतपूर्व रूप से बलवान बना देता है। और प्रारम्भ करने से पहले ही हार मान जाना निस्सन्देह अपने मन की संतुष्टि है। पर हलों के इतिहास पर ध्यान दें तो पाएँगे कि ऐसी प्रवृत्ति/रूझान रहने पर तो यह पलायनवाद मानव को कभी उड़ने के काबिल नहीं बना पाता, बीमारियां कभी नहीं दूर होती, रॉकेट कभी नहीं उड़ते। इस संदर्भ में यह उक्ति उचित है 'कठिन चीजें तो हम तुरन्त सम्पादित करते हैं, असम्भव चीजें थोड़ी देर में होती हैं।'

3.3 मैं यह नहीं कर सकता: मैं किसी भी चीज को करने लायक नहीं हूं। कुछ लोग ऐसा ही सोचते हैं। कुछ विशेषज्ञों के द्वारा तो समस्या हल की जा सकती है, पर मेरे द्वारा नहीं क्योकि मैं (1) चुस्त दुरूस्त (Smart) नहीं हूं (2) मैं एक शून्य हूं चाहे विशेषज्ञता के मामले में, या शिक्षित होने के विषय में हो। पुनः समस्या समाधान के इतिहास पर गौर करें। राइटबन्धु कौन थे जिन्होंने हवाई जहाज का आविष्कार किया? वे विमान इंजीनियर थे नहीं वे साइकिल के मिस्त्री थे। बॉल-प्वाइन्ट पेन एक प्रूफरीडर लेडिलाओं बीरो के द्वारा आविष्कृत किया गया वो एक यांत्रिकी इंजीनियर नहीं थे। पनडुब्बी डिजाइन में होने वाले प्रमुख विकासों को मूर्तरूप दिया अंग्रेज पादरी जी डब्लू गैरेट और आयरिश विद्यालय शिक्षक जॉन पी. हॉलैंड ने। कॉटनजिन्न का अविष्कार जाने माने अटॉर्नी और शिक्षक एली विटनी। अग्निशमन का आविष्कार नागरिक सेना के कप्तान जॉर्ज मैनबाइ के द्वारा किया गया। इसी प्रकार अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं। वस्तुतः हाल ही में कुछ लेखकों ने कारपोरेट जगत में अग्रगण्यता के बारे में एक बड़ी बात सामने रखी वो है उद्योग में नवाचार हमेशा लोगों के द्वारा लाए जाते हैं न कि शोधकर्ताओं के द्वारा। जनरल मोटर्स ने फ्रेयोन का आविष्कार किया। काडेक्रोम का अविष्कार दो वादकों ने किया सतत् इस्पात ढालने की प्रक्रिया को एक घड़ीसाज ने बनाया। साबुन बनाने वाले (केमिस्टों) रसायनों ने सिन्थेटिक डिर्टजेन्ट बनाने से इंकार कर दिया, ये डिर्टजेंट रंग बनाने वाले रसायनज्ञों द्वारा बनाए गए। सारांश यह कि एक अच्छा मस्तिष्क जिसके सकारात्मक रूझान हो और समस्या हल करने के अच्छे कौशल हों वे किसी समस्या को हल करने में दूरगामी होंगे। समस्या में रूचि और हल करने के प्रति प्रतिबद्धता ही मुख्य बातें होती हैं। प्रेरणा-प्रयास को लगाने की चाहत प्रयोगशाला के उपकरणों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। और यह याद रखें कि आप हमेशा कुछ कर सकते हैं। यदि धरती पर से समस्या को पूर्णतया हटाने में आप सक्षम नहीं होगें तो कम से कम स्थितियों को बेहतर तो आप कर ही सकते हैं।

●प्रोफेसर भरत राज सिंह,
क्रमशः